

---

senajidgItA from Bharatamanjari of Kshemendra

सेनजिद्रीता भारतमञ्जर्या क्षेमेन्द्रविरचिता

Document Information

---

Text title : senajidgItA from Bharatamanjari of Kshemendra

File name : senajidgItABM.itx

Category : giitaa, kShemendra

Location : doc\_giitaa

Author : Kshemendra

Description/comments : kAvyamALA 65. Bharatamanjari

Latest update : October 15, 2022

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 15, 2022

*sanskritdocuments.org*

---


## सेनजिद्रीता भारतमञ्जर्या क्षेमेन्द्रविरचिता




कथं समाश्रयेद्धर्मं विनष्टधनबान्धवः ॥ १३.६९७ ॥  
स तेन पृष्टः प्रोवाच शृणु सेनजितं नृपम् ।  
पुत्रशोकाकुलं कश्चिज्ज्ञात्वाभ्येत्यावदद्विजः ॥ १३.६९८ ॥  
अभावायैव जायन्ते भवेऽस्मिन्सर्वजन्तवः ।  
शोच्यस्त्वमपि कालेन कथं शोचसि पार्थिव ॥ १३.६९९ ॥  
यदृच्छया सङ्गतश्चेत्प्रतियातो यदृच्छया ।  
संसाराध्वनि तत्कोऽयं वियोगे मोहविभ्रमः ॥ १३.७०० ॥  
जायते क्षणदृष्टेषु स्नेहो दुःखाय देहिनाम् ।  
ममायमिति मुग्धानां न स तेषां न तस्य ते ॥ १३.७०१ ॥  
शोचन्त्यलुब्धं वाञ्छन्तः प्राप्तं शोचन्ति दुर्भगम् ।  
नष्टं शोचन्ति दुःखार्ता जन्तवः सुखिनः कदा ॥ १३.७०२ ॥  
धनपुत्रकलत्रेषु न स्निह्यन्ति विपश्चितः ।  
अवश्यं विप्रयोगो हि तैः परैश्च नृणां सदा ॥ १३.७०३ ॥  
को नाम प्रियसंयोगान्न मन्येतामृतोपमान् ।  
मर्मच्छिदो वियोगेषु यदि न स्युर्विषोत्कटाः ॥ १३.७०४ ॥  
पिङ्गला दत्तसङ्केतं कान्तं वाराङ्गना पुरा ।  
अनागतं चिरं ध्यात्वा स्वयमेकाब्रवीन्निशि ॥ १३.७०५ ॥  
आगतेनापि किं तेन वियोगे दुःखदायिना ।  
भजे कान्तमिहान्तस्थामनश्वरमशोचकम् ॥ १३.७०६ ॥  
इति सन्तोषपीयूषशान्ता शापापवेदना ।  
प्रतिबुद्धैव सुध्वाप परमे धाम्नि पिङ्गला ॥ १३.७०७ ॥

इति भारतमञ्जर्या क्षेमेन्द्रविरचिता सेनजिद्धीता समाप्ता ।

---

——  
*senajidgItA from Bharatamanjari of Kshemendra*  
pdf was typeset on October 15, 2022

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

